भजन

तर्जः– ये ही तमन्ना तेरे घर के सामने

क्या बतलाऊँ शोभा धनी की, युगल किशोर की नूरी छवि की

1 ए शोभा ना जाहेर दुनि में, तो क्यों ना आवे झूठी जुबाए

हक सूरत में जो खूबिया हैं, जानत हैं जो अर्श अरवाहें

रूह खोल नैना देख धनी की, सुन्दर शोभा और सलूकी

क्या बतलाऊं.

2) न्यारी गति है हक नैनन की, भौं भृकुटि शोभित सुखदाय

जो रूह मिलावे नैन नैन सों, आशिक इतथें निकस ना पायें

गुण नैनों के गिन नहीं पाऊं,अमीरस भरे इस सुख सागर की

क्या बतलाऊ

3.) शब्दातीत को शबद ना पहुँचे, ना पहुँचे कोई झूठ नमूना

मेरी रूह की निसबत से ही, हक ने ये दिल किया अर्श अपना

आशिक रूहें कुछ नहीं देखें, जिस अंग अटकी बस वहीं

क्या बतलाऊं.